LUKMAAN IAS

...Lead with Edge...

ऑनलाइन

सामान्य अध्ययन मुख्य परीक्षा टेस्ट श्रृंखला 2018 (मुखर्जी नगर)

ऑफलाइन

क्रम सं.	अध्याय	तारीख
टेस्ट 1	**सामान्य अध्ययन-I : भारतीय और विश्व इतिहास**	**25** नवंबर **2017**
टेस्ट 2	**सामान्य अध्ययन-I:भारतीय समाज, भारत की विविधिता/कला और संस्कृति** **टेस्ट पर परिचर्चा 1**	**09** दिसंबर **2017**
टेस्ट 3	**सामान्य अध्ययन-I : विश्व का भूगोल और समाज** **टेस्ट पर परिचर्चा 2**	**23** दिसंबर **2017**
टेस्ट 4	**सामान्य अध्ययन-II : संविधान और शासन प्रणाली** **टेस्ट पर परिचर्चा 3**	**30** दिसंबर **2017**
टेस्ट 5	**सामान्य अध्ययन-II : संविधान, शासन प्रणाली और सामाजिक न्याय** **टेस्ट पर परिचर्चा 4**	**13** जनवरी **2018**
टेस्ट 6	**सामान्य अध्ययन-II: शासन व्यवस्था, शासन प्रणाली और सामाजिक न्याय** **टेस्ट पर परिचर्चा 5**	**27** जनवरी **2018**
टेस्ट 7	**सामान्य अध्ययन-III : आर्थिक विकास** **टेस्ट पर परिचर्चा 6**	**10** फरवरी **2018**
टेस्ट 8	**सामान्य अध्ययन-III : प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और पारिस्थितिकी** **DISCUSSION OF TEST 7**	**17** फरवरी **2018**
टेस्ट 9	**सामान्य अध्ययन-IV : नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि** **टेस्ट पर परिचर्चा 8**	**24** फरवरी **2018**
टेस्ट 10	**सामान्य अध्ययन-IV: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि** **टेस्ट पर परिचर्चा 9**	**03** मार्च **2018**
टेस्ट 11	**सामान्य अध्ययन-IV: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि (सम्पूर्ण)** **टेस्ट पर परिचर्चा 10**	**10** मार्च **2018**
टेस्ट 12	**सामान्य अध्ययन-II अंतर्राष्ट्रीय संबंध, आपदा प्रबंधन, आंतरिक सुरक्षा और वर्तमान विकास.** **टेस्ट पर परिचर्चा 11**	**17** मार्च **2018**
	टेस्ट पर परिचर्चा 12	**24** मार्च **2018**

टेस्ट समय : 2 - 5 पूर्वान्ह

परिचर्चा समय : 10 अपरान्ह - 1 पूर्वान्ह

OLD RAJINDER NAGAR CENTRE :-60/19, BEHIND ANDHRA BANK, DELHI-60
CONTACTS: 011-45696019, 8506099919 & 9654034293
MUKHERJEE NAGAR CENTRE:- 871, FIRST FLOOR, MAIN ROAD,
(OPPOSITE BATRA CINEMA), MUKHERJEE NAGAR - 110009
CONTACTS: 011-41415591 & 7836816247
email:enquiries@lukmaanias.com www.lukmaanias.com

सामान्य अध्ययन मुख्य परीक्षा टेस्ट श्रृंखला 2018

क्र.सं.	अध्याय
टेस्ट 1	**सामान्य अध्ययन-I : भारतीय और विश्व इतिहास** • 18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक का आधुनिक भारतीय इतिहासमहत्त्वपूर्ण - घटनाएँ, व्यक्तित्व, विषय। • स्वतंत्रता संग्रामइसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले - उनका योगदान।/महत्त्वपूर्ण व्यक्ति • स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन। विश्व के इतिहास में 18वीं सदी तथा बाद की घटनाएँ यथा औद्योगिक क्रांति, विश्व युद्ध, राष्ट्रीय सीमाओं का पुनःसीमांकन, उपनिवेशवाद, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राजनीतिक दर्शन जैसे साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद आदि शामिल होंगे, उनके रूप और समाज पर उनका प्रभाव।
टेस्ट 2	**सामान्य अध्ययन-I : भारतीय समाज, भारत की विविधिता/कला & संस्कृति** • महिलाओं की भूमिका और महिला संगठन, जनसंख्या एवं संबद्ध मुद्दे, गरीबी और विकासात्मक विषय, शहरीकरण, उनकी समस्याएँ और उनके रक्षोपाय।. • भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का प्रभाव, सामाजिक सशक्तीकरण, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला के रूप, साहित्य और वास्तुकला के मुख्य पहलू शामिल होंगे।
टेस्ट 3	**सामान्य अध्ययन-I : विश्व का भूगोल और समाज** • विश्व के भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताएँ। • विश्व भर के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण दक्षिण एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप को शामिल) (करते हुए, विश्व के विभिन्न भागों में प्राथमिक (भारत सहित), द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिये ज़िम्मेदार कारक। भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखीय हलचल, चक्रवात आदि जैसी महत्त्वपूर्ण भूभौतिकीय घटनाएँ-, भौगोलिक विशेषताएँ और उनके स्थानऔर (स्रोत और हिमावरण सहित-जल) अति महत्त्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताओं - वनस्पति एवं प्राणिजगत में परिवर्तन और इस प्रकार के परिवर्तनों के प्रभाव।
टेस्ट 4	**सामान्य अध्ययन-II : संविधान और शासन प्रणाली** • भारतीय संविधानऐतिहासिक आधार -, विकास, विशेषताएँ, संशोधन, महत्त्वपूर्ण प्रावधान और बुनियादी संरचना। • संघ एवं राज्यों के कार्य तथा उत्तरदायित्व, संघीय ढाँचे से संबंधित विषय एवं चुनौतियाँ, स्थानीय स्तर पर शक्तियों और वित्त का हस्तांतरण और उसकी चुनौतियाँ। • संसद और राज्य विधायिकासंरचना -, कार्य, कार्यसंचालन-, शक्तियाँ एवं विशेषाधिकार और इनसे उत्पन्न होने वाले विषय। कार्यपालिका और न्यायपालिका की संरचना, संगठन और कार्यसरकार के मंत्रालय एवं विभाग -, भारतीय संवैधानिक योजना की अन्य देशों के साथ तुलना।
टेस्ट 5	**सामान्य अध्ययन-II : संविधान, शासन प्रणाली और सामाजिक न्याय** • प्रभावक समूह और औपचारिकअनौपचारिक संघ तथा शासन प्रणाली में उनकी भूमिका।/ • विभिन्न संवैधानिक पदों पर नियुक्ति और विभिन्न संवैधानिक निकायों की शक्तियाँ, कार्य और उत्तरदायित्व।. • सांविधिक, विनियामक और विभिन्न अर्द्धन्यायिक निकाय।- • विकास प्रक्रिया तथा विकास उद्योगसरकारी संगठनों-गैर -, स्वयं सहायता समूहों, विभिन्न समूहों और संघों, दानकर्ताओं, लोकोपकारी संस्थाओं, संस्थागत एवं अन्य पक्षों की भूमिका। • केन्द्र एवं राज्यों द्वारा जनसंख्या के अति संवेदनशील वर्गों के लिये कल्याणकारी योजनाएँ और इन योजनाओं का कार्यनिष्पादन-; इन अति संवेदनशील वर्गों की रक्षा एवं बेहतरी के लिये गठित तंत्र, विधि, संस्थान एवं निकाय। स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधनों से संबंधित सामाजिक क्षेत्रसेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित विषय।/

टेस्ट 6	**सामान्य अध्ययन-II : शासन व्यवस्था, शासन प्रणाली और सामाजिक न्याय** • शासन व्यवस्था, पारदर्शिता और जवाबदेही के महत्त्वपूर्ण पक्ष, ईअनुप्रयोग -गवर्नेंस-, मॉडल, सफलताएँ, सीमाएँ और संभावनाएँ; नागरिक चार्टर, पारदर्शिता एवं जवाबदेही और संस्थागत तथा अन्य उपाय। • सरकारी नीतियों और विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिये हस्तक्षेप और उनके अभिकल्पन तथा कार्यान्वयन के कारण उत्पन्न विषय। • जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ। • लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका। गरीबी एवं भूख से संबंधित विषय।
टेस्ट 7	**सामान्य अध्ययन-III : आर्थिक विकास** • भारतीय अर्थव्यवस्था तथा योजना, संसाधनों को जुटाने, प्रगति, विकास तथा रोज़गार से संबंधित विषय। • मुख्य फसलें देश के -विभिन्न भागों में फसलों का पैटर्न -सिंचाई के विभिन्न प्रकार एवं सिंचाई प्रणाली - कृषि उत्पाद का भंडारण, परिवहन तथा विपणन, संबंधित विषय और बाधाएँ; किसानों की सहायता के लिये ईप्रौद्योगिकी।- • प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कृषि सहायता तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य से संबंधित विषय; जन वितरण प्रणाली - उद्देश्य, कार्य, सीमाएँ, सुधार; बफर स्टॉक तथा खाद्य सुरक्षा संबंधी विषय; प्रौद्योगिकी मिशन; पशु पालन संबंधी अर्थशास्त्र। • भारत में खाद्य प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योगकार्यक्षेत्र एवं महत्त्व -, स्थान, ऊपरी और नीचे की अपेक्षाएँ, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन। • भारत में भूमि सुधार • उदारीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, औद्योगिक नीति में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास पर इनका प्रभाव। • निवेश मॉडल • समावेशी विकास तथा इससे उत्पन्न विषय। सरकारी बजट
टेस्ट 8	**सामान्य अध्ययन-III : प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और पारिस्थितिकी** • विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीविकास एवं अनुप्रयोग और रोज़मर्रा के जीवन पर इसका प्रभाव। - • विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियाँ; देशज रूप से प्रौद्योगिकी का विकास और नई प्रौद्योगिकी का विकास। • सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कंप्यूटर, रोबोटिक्स, नैनोटैक्नोलॉजी-, बायोटैक्नोलॉजी और बौद्धिक संपदा - अधिकारों से संबंधित विषयों के संबंध में जागरुकता। संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरण प्रभाव का आकलन।
टेस्ट 9	**सामान्य अध्ययन-IV : नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि** • नीतिशास्त्र तथा मानवीय सहसंबंधः मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्त्व-, इसके निर्धारक और परिणाम; नीतिशास्त्र के आयाम; निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र, मानवीय मूल्यमहान - नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका। • अभिवृत्तिः सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति; विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारण। • सिविल सेवा के लिये अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्यसत्यनिष्ठा -, भेदभाव रहित तथा गैरतरफदारी-, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमज़ोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना। • भावनात्मक समझः अवधारणाएँ तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग। **उपर्युक्त विषयों पर केस स्टडीज़**
टेस्ट 10	**सामान्य अध्ययन-IV: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि** • भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान। • लोक प्रशासन में लोक सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्रः स्थिति तथा/समस्याएँ; सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ तथा दुविधाएँ; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियम तथा अंतरात्मा; उत्तरदायित्व तथा नैतिक शासन, शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था में नैतिक मुद्दे (फंडिंग); कॉरपोरेट शासन व्यवस्था।

	• शासन व्यवस्था में ईमानदारीः लोक सेवा की अवधारणा; शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदानप्रदान और पारदर्शिता-, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ। **उपर्युक्त विषयों पर केस स्टडीज़**
टेस्ट **11**	**नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि(सम्पूर्ण)**
टेस्ट **12**	**सामान्य अध्ययन-II अंतर्राष्ट्रीय संबंध, आपदा प्रबंधन, आंतरिक सुरक्षा और वर्तमान विकास** • भारत एवं इसके पड़ोसीसंबंध। - • द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से संबंधित औरअथवा भारत के हितों को प्रभावित / करने वाले करार। • भारत के हितों पर विकसित तथा विकासशील देशों की नीतियों तथा राजनीति का प्रभाव; प्रवासी भारतीय। • महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, संस्थाएँ और मंचउनकी संरचना -, अधिदेश। • आपदा और आपदा प्रबंधन। • विकास और फैलते उग्रवाद के बीच संबंध। • आंतरिक सुरक्षा के लिये चुनौती उत्पन्न करने वाले शासन विरोधी तत्त्वों की भूमिका। • संचार नेटवर्क के माध्यम से आंतरिक सुरक्षा को चुनौती, आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों की भूमिका, साइबर सुरक्षा की बुनियादी बातें, धनशोधन और इसे - रोकना। • सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ एवं उनका प्रबंधनसंगठित अपराध और आतंकवाद के बीच संबंध। - • विभिन्न सुरक्षा बल और संस्थाएँ तथा उनके अधिदेश।

लेखकीय क्षमता निखारें !

प्रस्तावना

सामान्यतया, परीक्षार्थियों का मुख्य ध्येय उत्तर लिखना है, जिससे समय पर प्रश्न पत्र पूरा हो जाए. इस तीव्र दबाव में, यह मुश्किल ही हो जाता है कि प्रश्नों में ठीक-ठीक क्या पूछा जा रहा है, विशेषकर प्रश्नों में प्रयुक्त मुख्य शब्दावली और उप सर्ग या प्रश्नों में उल्लिखित प्रत्यय, उदाहरणार्थ; विश्लेषण/वर्णन/व्याख्या आदि; अतः प्रश्न की क्या मांग है और वास्तव में क्या लिखा गया है के बीच सुमेल नहीं हो पाता.

अधिकांश छात्र अपने विषय, अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रसंगों के बारे जानते हैं परन्तु वे उन्हें प्रस्तुत करना नहीं जानते हैं. याद रखें,

परीक्षा एक कला है और अनिवार्य रूप से ज्ञान की कसौटी नहीं है.

आपने अक्सर देखा होगा कि एक छात्र जो कम घंटे ही अध्ययन करता है परन्तु परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करता है. जबकि कुछ लोग जो रात-रात भर पढ़ते हैं और अपने नजदीकी लोगों से भी कट जाते हैं, परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते. ऐसा क्यों? वे अक्सर अपने दुर्भाग्य को दोष देते हैं, कुछ बुरे सगुन, कुछ नफरत करने वालों का शाप को इसकी वजह बताते हैं. इस दोष देने वाली प्रवृत्ति से बाहर निकलें. अपने श्रम व निष्ठा को शाप न बनाएं. संभवतः इसका कारण आपकी **लेखन कौशल** की कमी हो.

इसपर कुछ विचार करें, सामान्य अध्ययन और वैकल्पिक विषय के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप एक पैटर्न का अनुसरण करते हैं, जिसमें सामान्यतया पहले विषय या समस्या की भूमिका, तब विभिन्न पैरा में सभी पहलुओं को लिखते हैं और तब आप एक अच्छा निष्कर्ष लिखते हैं. आपने कुछ भी गलत नहीं लिखा मगर आप अच्छे अंक नहीं पाते हैं. प्रश्न है, क्यों? हमें लगता है आपने तीन चीज़ें की या उनमें से कम से कम एक :

तीन सिद्धांत जिसकी आप प्रश्नों को समझने में उपेक्षा करते हैं

1. आपने प्रश्न को बहुत गंभीरता से नहीं पढ़ा.
2. आपने निर्देशों या आदेशों या मांगों या जो कुछ जिसे आप कह सकते हैं, जैसे ; चर्चा, आलोचनात्मक परीक्षण, व्याख्या, उदाहरण सहित समझाना आदि की परवाह नहीं की.
3. आपने प्रश्नों के संदर्भ, प्रश्नों के भाग और प्रश्नों के परस्पर संबंधों पर ध्यान नहीं दिया.

कृपया, कृपया और कृपया प्रश्नों को जितना संभव हो गंभीरता के साथ पढ़ें :

- सवालों का चयन आराम से करें.
- सबसे पहले उस प्रश्न का उत्तर लिखें जो आपको सबसे बेहतर तैयार हो.
- उत्तर की लम्बाई के बजाय उसके सार तत्व पर ध्यान दें.
- मात्रा व गुणवत्ता के बीच संतुलन होना चाहिए.
- प्रश्न के संदर्भ, विषय वस्तु और आदेश के अनुरूप लिखें.

बेहतर उत्तर के लिए तीन सिद्धांत का दर्शन

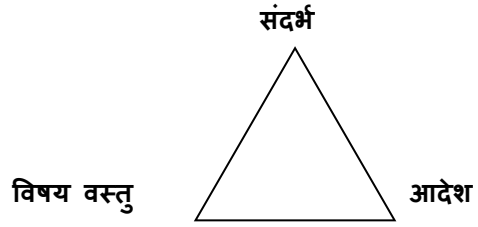

तत्व की तुलना में उत्तर की लम्बाई की प्रासंगिकता कम है

आप कह सकते हैं कि, महोदय, जहां इतना समय है, मैं उत्तर चूक जाउंगा. हम बताना चाहेंगे कि आप अधिकतम शब्दों, जितने की अनुमति दी गई है, न लिखें. यह अधिकतम शब्दों की सीमा है मगर कम से कम की नहीं परन्तु तब शब्दों की संख्या समुचित होनी चाहिए. अपने उत्तरों को लिखने में आप पहला पैरा निबंध के प्रारूप में और शेष को बिन्दुवार परन्तु अंतिम निष्कर्ष के पैरा निबंध के रूप में लिखना चाहिए. यदि औचित्य हो तो इस योजना में बदलाव हो सकता है.

अतः मुख्य बिंदु पर आते हैं; प्रश्न को सावधानीपूर्वक पढ़िए और तीन चीजों पर निर्णय करें:

1. प्रश्न का सटीक अर्थ क्या है?
2. प्रश्न कितने भागों में है?
3. प्रश्न के निर्देश, मांग या आदेश क्या हैं?

स्पष्टीकरण

1. अर्थ को कोई कितना बेहतर समझ रखता है यह ज्ञान के स्तर और जो प्रश्न गढ़ा गया है उसकी विषय-वस्तु / प्रसंग की समझ पर पर निर्भर करता है.
2. प्रश्न के संदर्भ का अर्थ विस्तृत रूप से प्रश्न का क्यों/कब/क्या है.
3. एक प्रश्न के विभिन्न भाग हो सकते हैं, जिसके सभी भागों के उत्तर देने की आवश्यकता हो सकती है.
4. उपसर्गों और प्रत्ययों की बेहतर समझ होनी चाहिए जो प्रश्न के आदेश और निर्देश को निर्धारित करते हैं.

प्रश्नों में प्रयुक्त शब्दावलियों की समझ

यह प्रश्न का उपसर्ग या प्रत्यय है जो उत्तर के निर्देश और आदेश को निर्धारित करता है.यह आपके सुविधा के लिए है, हम स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं कि इन शब्दों का क्या अर्थ है और आपको क्या लिखना होगा.

शब्दावली	अर्थ और मांग
चर्चा	चर्चा में आपको किसी मुद्दे पर उसके दो या सभी पहलुओं पर लिखना होगा. आलोचना न करें, बस सीधे विश्लेषणात्मक तरीके से सभी पक्षों को प्रस्तुत करें. निष्कर्ष के रूप में सभी पक्षों का संक्षिप्त सारांश लिखें.
समालोचनात्मक चर्चा	पुनः पहलुओं पर समालोचनात्मक चर्चा करें. चर्चा में आप किसी मुद्दे या समस्या पर उसके दो या सभी पहलुओं पर लिखें. चर्चा एक विस्तार है जिसमें किसी समस्या, मुद्दे और एक परिघटना के सभी पहलुओं को प्रस्तुत करना है. समालोचना एक लोकप्रिय आदेश है. समालोचनात्मक चर्चा किसी के उसके फायदे और नुकसान के परीक्षण द्वारा सभी पहलुओं के प्रस्तुत करने को दर्शाता है. कोई सभी पहलुओं को प्रस्तुत नहीं करता बल्कि विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करता है. समालोचनात्मक चर्चा पहलुओं के परीक्षण द्वारा या तो दो पहलुओं या पहलुओं के परीक्षण को संदर्भित करता है. एक किसी परिघटना का सकारात्मक बिंदु और

	नकारात्मक बिंदु देना है. उदाहरणार्थ अहिंसा के गांधीवादी विचार पर समालोचनात्मक चर्चा करनी है. इसमें अहिंसा के सकारात्मक बिन्दुओं को देखें औरभारतीय राष्ट्रीय संघर्ष का उदाहरण जरूर दें. तब अहिंसा कि अवधारणा की गंभीरता के साथ आलोचना करें और अहिंसा के सभी नकारात्मक पहलुओं को उद्धृत करें.
व्याख्या	यह एक सामान्य निर्देश भी है. आप समस्या का अर्थ लिखते हैं जिसमें सभी पहलु सम्मिलित हैं. आप सामन्यतया समस्या में उभर सकने वाली सभी चीजों को लिखने का प्रयास करते हैं. हम एक उदाहरण दे सकते हैं; क्यों स्मार्ट सिटी कार्यक्रम, यह 'स्मार्ट सिटी की व्याख्या' में लिखना होगा. व्याख्या सभी 'क्यों' का उत्तर है. यह सभी पहलुओं को छूता और उसकी पड़ताल करता है. स्पष्टीकरण या व्याख्या प्रश्न के संदर्भ को लिखने के लिए आवश्यक है. आप दिए गए संदर्भ द्वारा व्याख्या करते हैं या सहमत होते हैं. स्पष्ट शब्दावली में आप बिना किसी आलोचना और अपनी राय दिए सभी पहलुओं को लिखते हैं.
समालोचनात्मक परीक्षण, परीक्षण और मूल्यांकन	ये सभी सामान अर्थ ही दर्शाते हैं. आप पहले परिचय की दो पंक्तियों के बाद विचार या प्रस्तुति क्या है, का संक्षिप्त वक्तव्य लिखते हैं. केवल तभी आप मूल्यांकन, आलोचना या परीक्षण कर सकते हैं. परीक्षण का अर्थ केवल विचार की अस्वीकृति नहीं होती बल्कि इसका अर्थ समर्थन व प्रशंसा भी होता है. ऐसे प्रश्नों में आप अपनी तरफ से आलोचना नहीं करते हैं. आप एक विद्वान् की तरह आलोचना करने के योग्य नहीं हैं. आलोचना विद्वानों के विचारों के आधार [पर करें. संक्षेप में, आपको प्रस्ताव को ध्वस्त करना चाहिए.
टिप्पणी	सामान्यतया यह प्रश्न के अंत में प्रस्तुत किया जाता है और इसीलिए इसे प्रत्यय कहा जाता है. टिप्पणी में, आप किसी समस्या या मुद्दा या विषय पर विश्लेषणात्मक तरीके से विभिन्न पहलुओं को लिखते और आप अपनी राय भी देते हैं. टिप्पणी में सम्पूर्ण समस्या या मुद्दे को प्रस्तुत किया जाता है और मुद्दे या समस्या से संबंधित विभिन्न पहलुओं और विभिन्न विचारों की प्रस्तुति है. आलोचना करने का प्रयास नहीं करना चाहिए. आलोचना विद्वानों के विचार हैं और टिप्पणी आपके विचार हैं.
आलोचनात्मक टिप्पणी	साधारण शब्दों में आलोचनात्मक टिप्पणी दोहरा मूल्यांकन है. टिप्पणी में किसी को किसी विशेष मुद्दे पर अपना विचार देना होता है. टिप्पणी में किसी को ऐसी टिप्पणी करने की स्वतंत्रता है जो उस टिप्पणी के लिए या उस विचार के विरोध को दर्शाता हो. टिप्पणी निराधार नहीं है. इसके लिए आपको एक सामान्य अवलोकन की आवश्यकता है और तब आप टिप्पणी करें. यह सामान्य अवलोकन एक प्रकार का मूल्यांकन भी है. आलोचनात्मक टिप्पणी के लिए आपको एक मूल्यांकन के साथ सभी पहलुओं को दिखाना है जो व्यवस्थित और ठोस आधार पर हो. एक तो सभी मुद्दों के विवाद को एक-एक कर सावधानीपूर्वक देखना चाहिए. मूल्यांकन एक निश्चित मापदंड है. इस मूल्यांकन को दिए गए विषय या समस्या के गुणों और अवगुणों को दर्शाना चाहिए. इसलिए आलोचनात्मक टिप्पणी, एक व्यवस्थित रूप में मूल्यांकन के बाद टिप्पणी को दर्शाता है. टिप्पणी सुचिंतित रूप में किसीका विचार है परन्तु जब यह आलोचनात्मक टिप्पणी हो तब यह विचार व्यवस्थित मूल्यांकन के बाद देना चाहिए. उदाहरणार्थ; यदि कोई राष्ट्रवाद के प्रश्न पर टिप्पणी करता है, वह सामान्यतया कह सकता है कि राष्ट्रवाद पवित्र है और किसी को भी इसके खिलाफ कहने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए. अन्य गैर आलोचनात्मक टिप्पणी हो सकता है कि राष्ट्रवाद के कई आधार हैं और इसके विभिन्न विचार हो सकते हैं. आलोचनात्मक टिप्पणी राष्ट्रवाद के सिद्धांत के मूल्यांकन के द्वारा किया जाएगा और तब एक स्थिति लेगा. कोई राष्ट्रवाद के महत्व और राष्ट्रवाद के सकारात्मक

	प्रभाव दोनों का मूल्यांकन कर सकता है.
विश्लेषण	यह बारम्बार आने वाला निर्देश है. आप साधरण रूप से एक सादृश याद रखें. चिकित्सा छात्र की तरह जैसे वो अपने प्रयोगशाला में कीट या मानव अंगों को काटकर देखता है वैसे आप समस्या का विश्लेषण करते हैं. आप गहराई में जाते हैं, आंतरिक अर्थों को देखना चाहते हैं.
समालोचनात्मक विश्लेषण	हमने पहले ही विश्लेषण के अर्थ की प्रस्तुति की है. कोई भी किसी घटना के गहराई में जाने कि कोशिश में उसे विश्छेदित करता है और किसी घटना के कारण को प्रस्तुत करता है. इसके लिए किसी को घटना के अंदरूनी तहों में जाने की आवश्यकता है और उसकी शिराओं की खोज करणी पड़ती है. समालोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ एक गहन शिरा निरीक्षक है. कोई घटना के केवल मूलभूत कारणों को ही नहीं दर्शाता है बल्कि सभी अन्य आयामों को भी दर्शाता है. समालोचनात्मक विश्लेषण के लिए किसी को मूलभूत कारणों के साथ ही उसके गुणों अवगुणों को भी दर्शाने की आवश्यकता है. यह कारणों के सभी अंतरसंबंधित पहलुओं को देखने और विचार करने को संदर्भित करता है. यह गहराई में और मूलभूत और अंतरसंबंधित कारणों का विश्लेषण करता है. उदाहरणार्थ, कोई भारत में काले धन की समस्या का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है. कोई काले धन के स्रोतों को, काले धन के कारणों को, काले धन की पहचान करना क्यों कठिन है, कैसे अमेरिका जैसे अन्य देश इसको करते हैं, लिखता है. समालोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ यह नहीं होता कि आपको बहुत संक्षिप्त में बहुत अधिक गहरे कारणों को करना है.
विवरण	यह सबसे सरल निर्देश है. विवरण किसी घटना या तथ्य के सरल कथन का वर्णन है. विवरण में आप न तो आलोचना करेंगे और ना ही विश्लेषण. आप सीधे स्पष्ट विशेषताओं के बारे में लिखें. आप विशेषताओं को सीधे-सीधे लिखें.
सुस्पष्ट करना, विशदीकरण, विस्तृत विवरण और सविस्तार	ये लगभग सामान शब्द हैं. सामन्य तौर पर केन्द्रीय सेवा परीक्षाओं में वर्णन नहीं दिया गया है मगर अन्य प्रश्न वहाँ हैं. इन सभी मामलों में आप सीधे तरीके से तथ्य या तर्कों की अवस्था में हैं. आलोचना को नहीं आजमाना चाहिए. विस्तृत विवरण की आवश्यकता है.
भेद करना	यह निर्देश को दर्शाता है जब आप दो या अधिक घटनाओं के बीच अंतर को लिखते हैं. आपको सभी पहलुओं के भेद दिखाने हैं.
तुलना	यह निर्देश है जिसमें आप को सबसे पहले, घटना जिसकी आपको तुलना करनी है, के अर्थ का बहुत ही संक्षेप में प्रस्तुत करना है. तब आपको दोनों की विभिन्नताएं और वैसे ही समानताएं लिखनी हैं. निष्कर्ष में जब आप सार प्रस्तुत करते हैं समानताएं या भिन्नताएं क्या अधिक हैं, को लिखते हैं.
पुष्ट करना	इसका अर्थ है कि आप एक विशेष स्थिति को सिद्ध करते हैं. आप सिर्फ सकारात्मक पहलू बताते हैं. आप अपने तर्क को एक वकील की तरह प्रस्तुत करते हैं. आप परीक्षक को सहमत करते हैं.